No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-10

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2018

03431

एम.एच.डी.-10 : प्रेमचंद की कहानियाँ

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं *दो* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) कामतानाथ ने दूरदर्शिता का परिचय दिया – नुकसान की एक ही कही । हममें से एक को कष्ट हो, तो क्या और लोग बैठे देखेंगे ? यह अभी लड़के हैं, इन्हें क्या मालूम समय पर एक रुपया एक लाख का काम करता है ? कौन जानता है, कल इन्हें विलायत जाकर पढ़ने के लिए सरकारी वज़ीफ़ा मिल जाय, या सिविल सर्विस में आ जाएँ । उस वक्त सफ़र की तैयारियों में चार-पाँच हज़ार लग जाएँगे । तब किसके सामने हाथ फैलाते फिरेंगे ? मैं यह नहीं चाहता कि दहेज के पीछे इनकी ज़िंदगी नष्ट हो जाय ।

(ख) अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे । कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया । शायद अब वह ख़ुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा था, या रहा भी, तो बहुत कम । मेरी स्वच्छन्दता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा । मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो ही जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बन्द हुआ । मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाज़ी की ही भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था । माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूरनामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं । मैं भाई साहब को यह सन्देह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है ।

(ग) उसने जेब से पत्र निकालकर रूपमणि के सामने रख दिया । इन शब्दों में जो संकेत और व्यंग्य था, उसने एक क्षण तक रूपमणि को उसकी तरफ़ देखने न दिया । आनन्द के इस निर्दय प्रहार ने उसे आहत-सा कर दिया था; पर एक ही क्षण में विद्रोह की एक चिनगारी-सी उसके अन्दर जा घुसी । उसने स्वच्छन्द भाव से पत्र को लेकर पढ़ा । पढ़ा सिर्फ आनन्द के प्रहार का जवाब देने के लिए; पर पढ़ते-पढ़ते उसका चेहरा तेज से कठोर हो गया, गरदन तन गई, आँखों में उत्सर्ग की लाली आ गई ।

(घ) शंकर ने सालभर तक कठिन तपस्या की ! मीयाद के पहले रुपये अदा करने का उसने व्रत-सा कर लिया । दोपहर के पहले भी चूल्हा न जलता था, चबेने पर बसर होती थी, अब वह भी बंद हुआ । केवल लड़के के लिए रात को रोटियाँ रख दी जातीं ! पैसे रोज़ का तंबाकू पी जाता था, यही एक व्यसन था जिसका वह कभी न त्याग कर सका था । अब वह व्यसन भी इस कठिन व्रत की भेंट हो गया । उसने चिलम पटक दी, हुक्का तोड़ दिया और तमाखू की हाँडी चूर-चूर कर डाली । कपड़े पहले भी त्याग की चरम सीमा तक पहुँच चुके थे, अब वह प्रकृति की न्यूनतम रेखाओं में आबद्ध हो गए । शिशिर की अस्थिबेधक शीत को उसने आग तापकर काट दिया । इस ध्रुव-संकल्प का फल आशा से बढ़कर निकला । साल के अन्त में उसके पास साठ रुपये जमा हो गए ।

2. प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित स्वाधीनता आंदोलन का मूल्यांकन कीजिए । *10*

3. 'किसान समस्या और प्रेमचंद' विषय पर एक निबन्ध लिखिए । *10*

4. 'बूढ़ी काकी' का विवेचन कीजिए । *10*

5. नवीन जीवन मूल्यों के संदर्भ में 'गुल्ली डण्डा' का मूल्यांकन कीजिए । *10*

6. स्वाधीनता आन्दोलन को दृष्टि में रखते हुए 'समर-यात्रा' का विश्लेषण कीजिए । *10*

7. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

   (क) 'सवा सेर गेहूँ' का कथ्य

   (ख) प्रेमचंद की स्त्री-दृष्टि

   (ग) प्रेमचंद की कहानियों में राष्ट्रवाद

   (घ) प्रेमचंद की कहानी-कला